



॥ ओ३म् ॥

# युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—<http://www.facebook.com/groups/aryayouth/>

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

पर हार्दिक बधाई

इस अवसर पर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् को

मजबूत बनाने के लिये

101/- रू दान भेजें

वर्ष-30 अंक-18 फाल्गुन-2070 दयानन्दाब्द 190 16 फरवरी से 28 फरवरी 2014 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 8 वार्षिक शुल्क 48 रु.  
प्रकाशित: 16.02.2014, E-mail : [aryayouth@gmail.com](mailto:aryayouth@gmail.com) [aryayouthgroup@yahoo.com](mailto:aryayouthgroup@yahoo.com) Website : [www.aryayuvakparishad.com](http://www.aryayuvakparishad.com)



॥ ओ३म् ॥

जहाँ नहीं होता कभी विश्राम, आर्य युवक परिषद् हे उसका नाम  
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली  
के तत्वावधान में

## 190वाँ महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

सोमवार, 24 फरवरी, 2014 ❖ प्रातः 10.00 से 2.00 बजे तक

स्थान : हिन्दी भवन, 11 विष्णु दिगम्बर मार्ग, आई.टी.ओ., नई दिल्ली

मुख्य अतिथि

माननीय डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा  
(पूर्व सांसद व नेता प्रतिपक्ष, दिल्ली सरकार)

माननीय डॉ. सत्यपाल सिंह  
(पूर्व कमिश्नर, मुम्बई पुलिस)

आशीर्वाद : स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज (योगधाम हरिद्वार)  
दीप प्रज्जवलन : माननीय श्री बृजमोहनलाल मुन्जाल (चेयरमैन, हीरो मोटो कार्प)  
ध्वजारोहण : श्री जितेन्द्र नरूला (नरूला प्रापर्टीज)  
अध्यक्षता : श्री दर्शन अग्निहोत्री (प्रधान, वैदिक भक्ति आश्रम, देहरादून व रोहतक)  
मुख्य वक्ता : आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री  
विशिष्ट अतिथि : श्री आनन्द चौहान (निदेशक, ऐमिटी शिक्षण संस्थान), श्री नवीन रहेजा, डॉ.सुनील रहेजा  
श्री ओमप्रकाश सिंघल (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद), श्री रजनीश गोयनका  
श्री महेश गिरी (अग्रणी समाजसेवी), श्री हरीश खुराना (प्रवक्ता, भा.ज.पा.दिल्ली)  
श्री आर.एन.लखोटिया (टेक्स डाक्टर), आर्य नेता श्री मायाप्रकाश त्यागी (गाजियाबाद)

: दयानन्द सद्भावना अवार्ड :

श्री मदनलाल तनेजा (फरीदाबाद) श्री रामचन्द कपूर श्री ओमप्रकाश घई श्री दीपक सेठिया  
श्री ओम सपरा श्री रामानन्द आर्य श्री अमरनाथ गोगिया श्री सुशील घई श्री जगदीश मलिक

विशेष आमन्त्रित : सर्वश्री प्रदीप तायल, सुरेन्द्र कोहली, विष्णु गुप्त, रवि चड्ढा, रविन्द्र मेहता, जितेन्द्र डावर, सुरेन्द्र गुप्ता, प्रभात शेखर, के.एस.यादव, रंजन आनन्द, प्रि. अन्जु महरोत्रा, नीता खन्ना, प्रभा प्रोवर, विजयारानी शर्मा, अर्चना पुष्करना, विनोद कद, गायत्री मीना, अशोक गुलाटी, लक्ष्मी सिन्हा, रविदेव गुप्ता, रणसिंह राणा, सुरेन्द्र शास्त्री, धर्मपाल सिब्बल, ब्रह्मप्रकाश मान, रमेश गाडी, सुदर्शन खन्ना, रचना आहुजा, उर्मिला आर्या, विजय गुप्त, हरिचंद आर्य, देवदत्त आर्य, सरोज भाटिया, मुनीष गुलाटी।

ऋषि लंगर : दोपहर 2 बजे प्रबन्धक : सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य, विदेश, विमल, प्रदीप, रोहित, राकेश, गौरव

आप सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं

: दर्शनाभिलाषी :

डॉ. अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	यशोवीर आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महामन्त्री	रामकुमार सिंह प्रान्तीय संचालक	देवेन्द्र भगत प्रेस सचिव	विकास गोगिया स्वागताध्यक्ष
कृष्णचन्द पाहुजा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राकेश भटनागर राष्ट्रीय मन्त्री	सुशील आर्य राष्ट्रीय मन्त्री	संतोष शास्त्री प्रान्तीय महामन्त्री	प्रवीण आर्य राष्ट्रीय मन्त्री	दुर्गेश आर्य राष्ट्रीय मन्त्री
धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	विश्वनाथ आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	आनन्दप्रकाश आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	मनोहरलाल चावला राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	वीरेन्द्र योगाचार्य राष्ट्रीय मन्त्री	सुरेश आर्य राष्ट्रीय मन्त्री

कार्यालय:- आर्य समाज, कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, फोन: 9810117464, 9013137070

Website :

[www.aryayuvakparishad.com](http://www.aryayuvakparishad.com) [aryayouthgroup@yahoo.com](mailto:aryayouthgroup@yahoo.com)  
E-mail : [aryayouth@gmail.com](mailto:aryayouth@gmail.com) join - <http://www.facebook.com/group/aryayouth>

# ‘स्वयं विषपान कर संसार को अमृत पिलाने वाला अनोखा ऋषि दयानन्द सरस्वती’

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महर्षि दयानन्द का शिवरात्रि से गहरा ऐतिहासिक सम्बन्ध है। शिवरात्रि के व्रत ने ही बालक मूलशंकर को सच्चे शिव अर्थात् सृष्टि के रचयिता ईश्वर की खोज करने की प्रेरणा की। घर व परिवारजनों के बीच रहकर वह अपना अभीष्ट लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकते थे। इसके लिए उन्हें ऐसे विद्वानों, आचार्यों, व्याकरणाचार्यों, योगियों, चिन्तकों, मनीषियों तथा वेदज्ञों की संगति, उनके प्रशिक्षण व मार्गदर्शन की आवश्यकता थी जो उनकी शंकाओं को समझकर उन्हें दूर कर सकें। अतः घर छोड़ने का कठिन निर्णय उन्होंने लिया। सन् 1842 ई. से स्वामी दयानन्द की बालक मूलशंकर के रूप में सच्चे शिव की खोज आरम्भ होती है। इस कार्य के लिए उनका मार्ग दर्शन करने वाला कोई नहीं है। उन्होंने अपना उद्देश्य निर्धारित कर लिया और उसको प्राप्त करने की योजना की रूपरेखा उन्हें स्वयं ही बनानी है। उनका पहला कार्य यह था कि वह परिवारजनों से दूर किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंच जायें जहां वह निश्चिन्तता से अपने मार्ग पर आगे बढ़ सकें। अपने परिवारजनों से दूर रहकर वह ज्ञानी व योगियों की संगति से अपनी सभी शंकाओं का समाधान कर सच्चे शिव व सृष्टिकर्ता ईश्वर को जान कर मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लें। साथ ही मुक्ति की प्राप्ति के उपायों को जान कर उसके अनुरूप साधना कर कृतकार्य हो सकें। उनके जीवन के अध्येता व अनुयायी यह भली प्रकार जानते हैं कि वह अपनी खोज में सफल रहे। उनकी खोज से वह स्वयं अकेले ही लाभान्वित नहीं हुए अपितु उससे समूचे भारतीय समाज के साथ सारा विश्व भी लाभान्वित एवं प्रभावित हुआ। 27 फरवरी, 2014 को आ रही शिवरात्रि व उससे 4 दिन पूर्व उनका जन्म दिवस है। यह दो दिन भारत व विश्व के इतिहास के दो गरिमापूर्ण एवं महनीय दिवस हैं। इनकी महत्ता इस कारण है कि सूर्यास्त से उत्पन्न अन्धकार की भांति महाभारत युद्ध के पश्चात वेद व आर्ष ज्ञान के विलुप्त होने पर भारत व विश्व के लोग नाना प्रकार के अन्धविश्वासों, पाखण्डों, कुरीतियों में फंस गये थे। लगभग 5,000 वर्ष तक वेद व आर्ष ज्ञान प्रायः विलुप्त रहा। महर्षि दयानन्द ने अपने अपूर्व तप, ज्ञान, जिज्ञाविषा व योग बल से उस विलुप्त ज्ञान को प्राप्त किया और उसे मानव मात्र की सुलभ करायो। इस कारण वह सृष्टि के इतिहास में सर्वोपरि स्थान को प्राप्त हुए। महाभारत के पश्चात व महर्षि दयानन्द के आविर्भाव से पूर्व यह हुआ कि संसार के लोग सृष्टिकर्ता ईश्वर व जीवात्मा के सत्य स्वरूप को भूल गये थे। सर्वश्रेष्ठ मानव जीवन को पाकर भी उसका लक्ष्य प्राप्त करने के स्थान पर पहले से भी अधिक पतित होते जा रहे थे। पतन की चरम स्थिति तक पहुंच जाने की अवस्था के कारणों पर विचार कर उसके निवारणार्थ ज्ञान व विद्या प्राप्त कर दुःखों से मुक्त होकर मोक्ष व अपवर्ग प्राप्त तक का चिन्तन करने में संसार के लोग सर्वथा असमर्थ थे। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द का आविर्भाव हुआ और उन्होंने हर बात का समाधान किया जिससे उनके समय व वाद का सारा संसार उनका कृतज्ञ है।

शिवरात्रि के इस दिन हम आर्य समाज के मन्दिरों में जाकर वहां वेदों के विद्वानों के सान्निध्य में आत्मा, परमात्मा व सृष्टि के उपभोग से जुड़े प्रश्नों पर सारगर्भित प्रवचन व उपदेश सुनकर यथार्थ ज्ञान को प्राप्त होते हैं। प्रवचनों व अपने दैनन्दिन स्वाध्याय से मन में समुद्र की तरंगों की भांति समय-समय पर उठने वाले सत्य संकल्पों को जीवन में धारण कर ईश्वर-साक्षात्कार की स्थिति तक पहुंचने में अग्रसर व सफल हों, यही इस दिवस को मनाने की सार्थकता है। यदि इस दिन अवकाश करके केवल अन्न ग्रहण न कर उपवास रखने, शिव के काल्पनिक चित्र, मूर्ति व कथा को स्मरण कर व पौराणिक रीत्यानुसार शिव की स्तुति व आरती आदि करके शिवरात्रि व ऋषि बोध दिवस को मनाते हैं तो हम कहेंगे कि हमारे ऐसे भाईयों व बहिनों को शिवरात्रि मनाना ही नहीं आता। वह अन्धकार में पड़े होने पर भी यह अनुभव ही नहीं कर पा रहे हैं कि वह अन्धकार से ग्रसित हैं। अज्ञान के अन्धकार से ग्रसित व्यक्ति को यदि अपने स्वरूप व स्थिति का यथार्थ ज्ञान न हो तो फिर उसका कल्याण होना कठिन वा असम्भव होता है। ऐसी ही कुछ स्थिति पौराणिक विधियों से शिवरात्रि मनाने वाले हमारे भाईयों की है और साथ में अन्य मतावलम्बी भी इन्हीं पौराणिक भाईयों की तरह अन्धकार से आवृत अपने पुराने संस्कारों की कमाई, प्रारब्ध को भोग कर सुख अनुभव कर रहे हैं जिससे उनका प्रारब्ध व पुण्य कर्म घट रहे हैं और आगे के लिए जमा-पूजा-रूपी-प्रारब्ध के न बचने के कारण उनके लिए हानि, दुःख, चिन्ता, निराशा, रोग व क्लेश आदि की स्थिति बन रही है।

लगभग 2,500 वर्ष पूर्व बौद्ध व जैन मत का प्रादुर्भाव प्रायः कुछ अन्तराल के आस पास हुआ और मूर्तिपूजा इन्हीं के द्वारा न केवल भारत में अपितु संसार भर में प्रचलित हुई। इससे पूर्व भारत वर्ष व विश्व में कहीं भी मूर्ति पूजा किये जाने के प्रमाण उपलब्ध नहीं है। वेद नाम से प्रसिद्ध चार मन्त्र संहितायें ईश्वरीय ज्ञान हैं जिनकी मान्यताओं व सिद्धान्तों से मूर्तिपूजा अर्थात् ईश्वर के स्थान पर पाषाण व धातु आदि की मूर्ति को ईश्वर मानकर पूजा करने का खण्डन होता है। यह कृत्य ऐसा ही है जैसे कि माता-पिता घर में विद्यमान हैं, उनका पुत्र उनकी अनदेखी करके उनके चित्र पर पुष्प-माला व पुष्प, फल, जल, अन्न आदि भेंट कर रहा है या उनके नाम पर पुजारियों को अन्न व धन दान दे रहा है। माता-पिता यह देख कर चिन्तित व दुःखी हो रहे हैं परन्तु वह पुत्र उनकी भावनाओं व इच्छाओं पर ध्यान नहीं दे रहा है। पुत्र की भांति ऐसी ही स्थिति मूर्तिपूजा करने वालों की है जिनसे सच्चा ईश्वर कुपित है। शिव-पूजा के सन्दर्भ में लगता है कि बौद्धों व जैनियों से प्रभावित होकर हमारे अल्पज्ञानी या अज्ञानी व कुछ-कुछ स्वार्थ से प्रेरित लोगों ने ऐतिहासिक महान् पुस्तक भगवान् शिव की उपासना व पूजा आरम्भ की होगी। उनकी पूजा आरम्भ करने से पहले भक्तों व उपासकों को शिव-उपासना का महात्म्य भी बताया था। इसके लिए उन्होंने शिव पुराण जैसे ग्रन्थ की रचना की। शिव पुराण ही नहीं अपितु सभी पुराणों के वर्णन अविश्वनीय हैं जिन्हें व्यवहार में घटा कर देखने पर वह सत्य सिद्ध नहीं होते। ऐसा प्रतीत होता है कि एक ऐतिहासिक शिव हुए थे जो बहुत बड़े धर्मात्मा, योगी, व्याकरणाचार्य, आयुर्वेदाचार्य, संगीत, नृत्याचार्य एवं अनेक विद्याओं में पारंगत थे। इसका सप्रमाण वर्णन पं. युसिष्ठिर मीमांसक ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ ‘संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास’ में किया है। जब वैदिक धर्म का हास हो चुका था तो वह नास्तिक बौद्ध

व जैन मतों से रक्षा के लिए सम्भवतः समयानुसार यह पौराणिक शिव उपासना आरम्भ की गई थी। जिन लोगों ने यह पद्धति आरम्भ की वह अपने समय के बहुत बड़े तथाकथित विद्वान रहे होंगे। महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि जिस देश में कोई वृक्ष नहीं होता वहां अरण्य के वृक्ष को ही वट-वृक्ष माना जाता है। परिस्थितियों के अनुसार ऐसा होना स्वाभाविक व व्यवहारिक होता है।

इसी प्रकार से पुराणों के निर्माण काल में वेदज्ञ विद्वानों के न रहने पर जो संस्कृत जानने वाले व ग्रन्थ रचना में समर्थ व्यक्ति थे, परन्तु जो वेदों के सिद्धान्तों से या तो अनभिज्ञ थे या फिर कुछ अज्ञान व स्वार्थ जिनमें था, उन्होंने इस प्रकार की पूजा पद्धतियां रच डालीं। प्रश्न पूछने वाले व शंका करने वाले लोग उस समय नहीं थे। जो थे, उन्होंने सत्य मार्ग पकड़ने के स्थान पर अपना नया मत या नया पुराण बना डाला और अन्धों की निन्दा व अपने मत व पुराण की स्तुति की। विद्वानों के अनुसार ऐसा ही वर्णन सभी पुराणों में मिलता है जो यथार्थ न होकर काल्पनिक होने से अविश्वसनीय या त्याज्य है। यहां हम एक उदाहरण देना चाहते हैं। हमारे एक पौराणिक मित्र श्री चन्द्र दत्त शर्मा, फलित ज्योतिषविद्, उनके पिता श्री अमन सिंह शर्मा, माताजी, पत्नी, पुत्र हिमांशु व दो पुत्रियां लगभग 30 वर्ष पूर्व शिवरात्रि के दिन दूरदर्शन पर शिवरात्रि का कार्यक्रम देख रहे थे। श्री शर्मा शिक्षा काल में ही आर्य समाज के सम्पर्क में आये परन्तु रहे अधिकांशतः पौराणिक व कुछ थोड़े आर्यसमाजी। उनका परिवार पौराणिक व आर्य समाज के विचारों का मिश्रित रूप था। उनके पिता श्री अमन सिंह शर्मा भी प्रमुख फलित ज्योतिषविदों में थे। शिवलिंग की पूजा का दृश्य दिखाये जाने पर सब घर वालों ने हाथ जोड़ कर अपनी श्रद्धा व भक्ति का परिचय दिया परन्तु पुत्र हिमांशु ने न तो शिर ही झुकाया और न हाथ ही जोड़े। दादाजी के हाथ जोड़ने के लिए कहने पर उसने कहा – ‘मैं हाथ क्यों जोड़ू, यह कोई भगवान् थोड़ी है, यह तो पत्थर है।’ शर्माजी ने इस घटना का पूरा विवरण वाद में मिलने पर हमें बताया। अब यह बालक बड़ा हो गया है तथा पढ़-लिख कर समृद्ध व सम्मानित जीवन व्यतीत कर रहे हैं और विचारों से प्रायः पौराणिक ही है। मूर्तिपूजा की एक शिक्षाप्रद घटना आर्य समाज के विद्वान् गुंजरात के प्रसिद्ध सोमनाथ मन्दिर से जोड़कर सुनाते हैं। एक बार बहुत दूर से आये एक ग्रामीण वृद्ध बन्धु ने शिवरात्रि के दिन सोमनाथ मन्दिर में पूजा-अर्चना की और वाहर न जाकर हाथ जोड़कर श्रद्धान्वत वहीं खड़ा रहा। उस दिन वहां भीड़ अधिक होने व अव्यवस्था की आंशका के कारण पुजारी द्वारा उसे डांटने पर उसने कहा कि ‘वह बहुत दूर से आया है, उसे खड़ा रहने दें। शायद भगवान् उसे दर्शन दे दें।’ यह सुनकर पुजारी क्रोधित होकर बोला कि ‘हमें व हमारे पूर्वजों को वर्षों यहाँ पूजा कराते हो गये, हमें तो आज तक दर्शन दिये नहीं, तुझे क्या दर्शन देंगे?’ हमारा अनुमान है कि आज तक किसी मूर्तिपूजक को ईश्वर के साक्षात् दर्शन या साक्षात्कार नहीं हुआ है। इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यदि किसी को ईश्वर का साक्षात्कार हुआ हो तो वह योग साधना आदि कर्मों व साधनों से ही हुआ होगा। अतः मूर्तिपूजा निरर्थक सिद्ध होती है, निरर्थक इसलिए कि इससे उपासना व पूजा का मुख्य उद्देश्य ‘ईश्वर का साक्षात्कार’ पूरा नहीं होता और उपासना से जो ईश्वरीय गुण, सदाचार अर्थात् आचरण की पूर्ण पवित्रता व शुद्धता, परोपकारिता, दया, करुणा, धैर्य आदि उपासक में आने चाहिये, उसके स्थान पर बुद्धि की जड़ता-मलिनता-अपवित्रता, उत्पन्न व विचार करने में असमर्थता, सत्य को स्वीकार न करना आदि जैसे गुण-अव्युण्ण उपासक में आते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती घर से निकलकर योगियों, संन्यासियों, विद्वानों की खोज करते हुए तथा उन्हें जो मिलता उससे योग व उपासना के साधन सीखते हुए आगे चलकर मथुरा के ब्राह्मण स्वामी गुरु विरजानन्द सरस्वती के अन्तेवासी शिष्य बने। लगभग 3 वर्षों में उन्होंने उनसे आर्ष व्याकरण व आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन पूरा किया। व्याकरण पढ़कर वह वेद व इतर वैदिक आर्ष ग्रन्थों के आशय, उद्देश्य, उनमें निहित सत्य व अन्याय विषयों को समझने की योग्यता उन्होंने प्राप्त की। वह जान गये कि मूर्तिपूजा, अवतारवाद, विभिन्न पौराणिक व्रतोपवास आदि अनार्थ व वेदविरुद्ध कमानुष्ठान से किसी आध्यात्मिक लाभ या लक्ष्य की सिद्धि नहीं होती। इसके स्थान पर योग दर्शन के अनुसार साधना करने से ईश्वर का साक्षात्कार होता है। बुद्धि सूक्ष्म विषयों को ग्रहण करने में समर्थ होती है। ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के अनेक रहस्यों का बोध होता है। ईश्वर साक्षात्कार की अवस्था आने पर सभी आत्मिक, मानसिक, बौद्धिक व शारीरिक क्लेशों से मुक्ति मिलती है। ध्यान व समाधि में ईश्वर के सान्निध्य से आत्मा आनन्द की अनुभूति करता है। जिस प्रकार शीतल जल से स्नान करने पर शरीर की उष्णता समाप्त होती है, इसी प्रकार समाधि में ईश्वर से संयोग होने पर सभी दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख दूर होकर आनन्द की प्राप्ति व ईश्वर के स्वरूप में एकाग्रता आती है। यही कारण है कि सृष्टि के आरम्भ से आज तक सभी ज्ञानी व योगी मनुष्य विरक्त होकर ध्यान व समाधि द्वारा ईश्वरोपासना, जिसमें स्तुति व प्रार्थना भी सम्मिलित है, करते आये हैं। क्या यह सम्भव है कि जीवन भर स्तुति, प्रार्थना व उपासना के करने से यदि उन्हें इष्ट लक्ष्य, ईश्वर साक्षात्कार, दुःखों की निवृत्ति व आनन्द की प्राप्ति, न होती तो वह ईश्वर की उपासना का उपदेश करते, विविध ग्रन्थों की रचना कर इनके पथ में प्रमाण देते और उपनिषद जैसे उच्च आध्यात्मिक ग्रन्थों की भी रचना करते? विवेचना से यह सिद्ध है कि समाधि सिद्ध होने पर प्राप्त होने वाले लाभों का उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव हुआ था व समाधि की उपलब्धियां भी प्राप्त हुई थीं। यही कारण है कि स्वामीजी ने गुरु विरजानन्द की कुटिया से विदा लेने पर 1 वर्ष से अधिक आगरा में निवास किया व अपनी पहली पुस्तक सन्ध्या, ईश्वरोपासना पर ही लिखी। सन्ध्या क्या है, हमारे लिए सृष्टि की रचना करने व हमें मानव जन्म देने के लिए ईश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए की जाने वाली स्तुति, प्रार्थना व उपासना की विधि है जिसके सिद्ध होने पर ईश्वर का साक्षात्कार होता है। उन्होंने सन्ध्या में लिखा है कि ‘हे ईश्वर दयानिधे, भवत्कृपया अनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थ काम मोक्षानाम् सद्यः सिद्धिर्भवेन्नृ’ यह वाक्य और किसी पर चरितार्थ हो या न हो, परन्तु महर्षि दयानन्द पर पूर्णतः चरितार्थ हुआ था। हमें प्रतीत होता है कि यहां काम से अभिप्रायः समाधि में प्राप्त होने वाले ईश्वर

के आनन्द से है और मोक्ष का अर्थ पूर्ण दुःखों की निवृत्ति है। इसके साथ ही मोक्ष का अर्थ जन्म-मरण से छूटना भी है जो कि उनकी मृत्यु के पश्चात उन्हें प्राप्त हुआ होगा, ऐसा अनुमान से कह सकते हैं। सन्ध्या का वैदिक जीवन पद्धति में शीर्षस्थ स्थान है। अन्य सभी कर्तव्य व कर्मकाण्ड सन्ध्या के पूरक है। सन्ध्या विहीन मनुष्य की नास्तिक संज्ञा है।

स्वामी दयानन्द जब अपने गुरु विजयानन्द की कुटिया से निकले तो उनके सामने संसार में आर्ष ज्ञान को प्रतिष्ठित करने का महान लक्ष्य व कार्य था। इसके लिए उन्होंने आगरा में एक वर्ष से अधिक अवधि तक रहकर अपनी योजना तैयार की। उन दिनों की परिस्थितियों के अनुसार इसके लिए उन्होंने मौखिक उपदेश, वार्तालाप, विचार-विनिमय, शंका समाधान, शास्त्रार्थ व शास्त्र-चर्चा तथा ग्रन्थ लेखन को अपना साधन बनाया। आगरा से आरम्भ होकर जोधपुर में प्रचार करने व मृत्यु तक वह इन्हीं साधनों का भरपूर उपयोग करते रहे। उनके कार्यों में विरोधियों, पौराणिकों, विधर्मियों, विदेशी शासकों ने कठिनाईयाँ पैदा कीं। लगभग 17 बार उन्हें विष देकर उनकी जीवन लीला समाप्त करने का भी प्रयास किया गया परन्तु वह अपने जीवन की अन्तिम श्वांस तक डटे रहे और अविद्या व अज्ञान का नाश तथा विद्या की वृद्धि करने के लिए दृढ़ता से वेदों का प्रचार करते रहे। ऐसा देखा गया है कि कभी-कभी बुरे काम में भलाई या विष में से अमृत निकल आता है। महर्षि दयानन्द को शिवरात्रि की मिथ्या पूजा-उपासना से ही ईश्वर के शिव-स्वरूप को खोजने, उसे प्राप्त करने, बन्धनों व दुःखों से दूर होने की प्रेरणा व शिक्षा मिली थी। उन्होंने कालान्तर में ईश्वर के शिव अर्थात् कल्याणकारी स्वरूप को जाना तथा उसको प्राप्त करने की योग्य दर्शनकार महर्षि पतंजलि द्वारा निर्मित उपासना पद्धति के ग्रन्थ योग दर्शन का अध्यास कर स्वयं ईश्वर को प्राप्त किया। संसार के कल्याण की भावना से वेद व योग दर्शन के आधार पर एक सक्षिप्त लघु आर्ष ग्रन्थ पंचमहायज्ञ विधि के नाम से प्रकाशित कराया जिसमें प्रथम सन्ध्या की विधि दी गई है। वैदिक साहित्य में ईश्वरोपासना पर लिखा गया यह ग्रन्थ अन्यतम है। सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने लिखा है कि काशी के एक सुविख्यात पौराणिक विद्वान् को जब यह सन्ध्या पद्धति दी गई तो उन्होंने अनेक वर्षों से की जाने वाली अपनी सन्ध्या को छोड़ कर इसे अपना लिया। बाद में जब पता चला कि यह तो स्वामी दयानन्द ने लिखी है तो वह हैरान हुए और पण्डितजी से पूछा कि क्या स्वामीजी इतने बड़े विद्वान् थे? वह तो समझते थे कि स्वामी दयानन्द कोई अल्प ज्ञानी हैं व अनधिकार मूर्तिपूजा का खण्डन करते हैं। ईश्वर प्रदत्त पूर्ण सत्य वैदिक मत पर यूरोप, एशिया, अरब आदि विश्व के सभी भागों में बसे स्त्री-पुरुषों का समान व पूरा-पूरा अधिकार है। उन्हें उनका अधिकार दिलाने तथा वेदों का महत्व बताने के लिए, अपने प्राणों का मोह त्याग कर संसार के कल्याण की भावना से प्रत्येक मानव को ईश्वर का साक्षात्-दर्शन कराने के लिये वह क्रुद्ध व हिंसक विरोधियों के बीच कूद पड़े।

हम समझते हैं कि स्वामीजी वेदों को ईश्वर से उत्पन्न आदि-ज्ञान, धर्म व आचरण का मूल धर्म-ग्रन्थ सिद्ध करने में पूर्ण सफल हुए हैं। यह वेद संसार के सभी धर्म-ग्रन्थों में अपूर्व, अग्रणीय व प्रमुख ज्ञान-कर्म-उपासना-विज्ञान के ग्रन्थ हैं। यह चार वेद ईश्वर का नित्य ज्ञान है जो सदैव एक समान रहता है। इसमें किसी प्रकार की भी अपूर्णता नहीं है। अज्ञानी मनुष्य उनके मिशन को समझ ही नहीं पाये तथा स्वार्थ व अविद्या से ग्रस्त शिक्षित मतावलम्बियों ने भी उनके भावों को समझने का प्रयास नहीं किया। वह सब अपने-अपने हवा-महल रूपी मत-मतान्तरों को बचाने में लगे रहे। आज संसार में तर्क, युक्ति व प्रमाण की कसौटी पर केवल वेद व उसकी मान्यतायें ही स्थिर हैं जिन्हें वेद-व्याकरण-निरुक्त-युक्ति व प्रमाणों के आधार महर्षि दयानन्द ने प्रस्तुत किया है। अतः स्वामी दयानन्द आज धर्म के सच्चे जिज्ञासुओं के यथार्थ समाधान के एकमात्र अधिकारी विद्वान् के गौरवमय स्थान पर सुशोभित हैं। अन्य कोई महापुरुष या विद्वान् उनकी स्थिति में नहीं है। ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, जन्म मरण से मुक्त है तथा उसका अवतार नहीं होता। न कोई उसका एकलौता पुत्र हुआ और न उसे अपने लिए किसी सन्देशवाहक की आवश्यकता पड़ती है। इस सन्ध्या में जो बातें हैं, वह भोले धार्मिक लोगों में भ्रान्ति उत्पन्न करती हैं। सर्वशक्तिमान होने के कारण उसका एकमात्र पुत्र होना व अपने किसी सन्देशवाहक को भेजे जाने की मान्यतायें मिथ्या व असत्य सिद्ध होती हैं। स्तुति, प्रार्थना व उपासना एक प्रकार से यम-नियम का पालन, आसन, प्राणायाम, धारणा, ध्यान व समाधि को सिद्ध करना है जिससे उपासना की सफलता होने पर ईश्वर का साक्षात्कार होता है। इसके साथ ही स्तुति, प्रार्थना व उपासना से बुरे व पाप कर्मों का भविष्य के सन्दर्भ में क्षय होकर, मुक्ति, मोक्ष, जन्म-मरण से छुट्टी, सभी दुःखों की निवृत्ति व ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त होता है। लगभग 3110.40 खरब वर्षों तक जन्म-मरण से मुक्त, पूर्ण आनन्द की अवस्था में रहकर मुक्त जीवात्मा पुनः मनुष्य जन्म पाता है। यह उपलब्धि जिज्ञासु, सत्यान्वेषी, धर्म प्रेमी, ईश्वर भक्त, सारे संसार को अपना परिवार समझने, मानने वाले सच्चे व सफल ईश्वरानुयायी, मुक्त जीवात्मा को प्राप्त होती है। आज महर्षि दयानन्द संसार में नहीं हैं, परन्तु वह अपने यशः शरीर से जीवित हैं। वह निश्चित ही ईश्वर को प्राप्त हुए होंगे और आज मोक्षावस्था में वह पूरे पृथिवी लोक का भ्रमण कर संसार के मनुष्यों की अवस्था को देखते होंगे। आर्य समाज की वर्तमान स्थिति को देखकर उन्हें दुःख भी अवश्य होता होगा। वह ईश्वर के जीव-कर्म-स्वातन्त्र्य सिद्धान्त को जानने के कारण ईश्वर को कुछ कह भी नहीं सकते। वह ईश्वर से केवल यही प्रार्थना करते होंगे कि आर्य समाज व संसार के सभी सत्पुरुषों के हृदयों में सत्य के ग्रहण व असत्य के त्याग की निरन्तर प्रेरणा करते रहें, परन्तु यह मनुष्य सांसारिक सुखों से इतने अधिक आसक्त हैं कि अधिकांश मनुष्यों को सत्य-असत्य से कोई लेना-देना ही नहीं है। बहुत से लोग तो सत्य को जान लेने पर भी आसक्ति में फंसे होने के कारण कुछ कर ही नहीं पा रहे हैं। देश में लगभग 1 हजार वैदिक गुरुकुल होने पर भी हम विद्वान् तो बहुत बना रहे हैं परन्तु गुरुकुल व आर्य समाज की सभी संस्थायें मिलकर भी अभी तक एक स्वामी दयानन्द नहीं बना सकीं। हम तो आज भी स्वयं देखते हैं कि गुरुकुल का हर ब्रह्मचारी दयानन्द बनकर संसार से अज्ञान तिमिर का नाश करे। क्या वर्तमान या भविष्य में दयानन्द के समान ब्रह्मचारी, योगी, ईश्वर भक्त, विद्वान्, ज्ञानी, ऋषि, मनीषी, मुनि, विश्व प्रेमी, वेदभक्त व वेदमाता का सच्चा पुत्र हममें से कोई बन सकेगा? दयानन्दसम बनना ही संसार भर में मनुष्य जीवन का एक आदर्श लक्ष्य है।

वर्तमान काल को ज्ञान का युग भी कह सकते हैं। आज भारत में वर्ण व्यवस्था के विकृत रूप 'जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था' की जो स्थिति है, वह देश व समाज के लिए अहितकर है। यद्यपि आजकल समाज में गुण-कर्म-स्वभाव प्रधान प्रेम विवाह भी हो रहे हैं परन्तु आज जातिवाद की जड़े स्वामी दयानन्द के समय की ही भांति समाप्त होने के स्थान पर दृढ़ व गहरी हुई प्रतीत होती हैं। हमें अपने क्षेत्र व आसपास स्वयं को ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य कहने व कहलाने वाले बन्धुओं को मांसाहार, मदिरापान, अण्डे व सिगरेट आदि के सेवन में लिप्त देखकर आश्चर्य होता है। क्षत्रिय व वैश्यों का स्थान तो वरिष्ठता में दूसरा व तीसरा है पर जब स्वयं को प्रथम स्थान पर मानने वाले ब्राह्मण ही, ब्रह्म = ईश्वर में सतत् विचरण करने वाले ही, मांसाहारी, मद्यपायी, अभक्ष्य-भक्षी हों, ऐसे समाज में वैदिक क्रान्ति का सफल होना अत्यन्त कठिन है। वैदिक विचारधारा का महत्व प्रतिपादित कर आज सन्ध्या, यज्ञ, माता-पिता-आचार्य-वृद्धों का सम्मान-सत्कार-सेवा-आज्ञापान, गोरक्षा व हिन्दी रक्षा के पक्ष में तथा मांसाहार, मद्यपान, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मत-मतान्तर, जन्मजाति के विरुद्ध जन आन्दोलन व अभियान चलाया जाना चाहिये। आध्यात्मिक व सामाजिक क्रान्ति के बिना देश बदलेगा नहीं। हमें यह समझना है कि आर्य समाज कोई सन्ध्या, हवन, सत्संग या वार्षिकोत्सव करने-कराने वाली संस्था मात्र नहीं है अपितु आर्य समाज एक अग्निमय आन्दोलन है जिसका उद्देश्य सत्य-वैज्ञानिक वैदिक विचारधारा का सर्वत्र प्रचार-प्रसार व व्यवहार तथा वैदिक मान्यताओं की विश्व स्तर पर स्वीकारोक्ति के उद्देश्य की प्राप्ति तक सतत् संघर्ष कर समाज में क्रान्ति करना है। आर्य समाज के विद्वानों, नेताओं अधिकारियों व सदस्यों को यह बात सदैव ध्यान में रखनी योग्य है।

ऋषि दयानन्द ने योगाभ्यास एवं वेद विद्या की प्राप्ति में नानाविध तप किया, कष्ट सहे, समाधि के सुख को छोड़कर वेदों के प्रचार व सत्य के ग्रहण करने-कराने में प्रशंसनीय कार्य किया, अपमान व विरोध सहा तथा अनेकों बार विषपान किया। देश व समाज के लिए इतना कुछ करने पर भी उन्हें सम्मान मिलने के स्थान पर अपनों ने एक प्रकार से विष ही परोसा। उन्होंने विश्व, देश व समाज की भलाई के लिए आर्य समाज की स्थापना, सत्य ज्ञान से पूर्ण वेदों का प्रचार, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों का प्रणयन, ऋग्वेद का आंशिक तथा यजुर्वेद का पूर्ण वेद-भाष्य, शास्त्रार्थ, देश-देशान्तर में सत्य व वैदिक मान्यताओं का प्रचार, असत्य का खण्डन व सत्य का मण्डन, लेखन, उपदेश, प्रवचन, पत्रव्यवहार, श्यामजी कृष्ण वर्मा को इंग्लैण्ड भेजकर वेद प्रचारार्थ विदेशी प्राच्य विद्याविद्वों को आर्यमत के यथार्थ स्वरूप का बोध कराने की प्रेरणा व प्रयत्न, भारतीय युवकों को प्रायोगिकी के प्रशिक्षण के लिए जर्मनी भेजने का सक्षिप्त प्रयास आदि कार्य देश, समाज व संसार के सभी लोगों के लिए अमृत के समान हैं। उन्होंने ही ईश्वर की उपासना के फल धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष का उल्लेख कर सभी मनुष्यों को समस्त दुःखों से छुड़ाकर इसके साथ 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों तक मोक्ष में रहते हुए ईश्वर के सान्निध्य व आनन्द में बिताने के साधन भी बताये। यह सब एक प्रकार से उनके द्वारा संसार के प्रत्येक मनुष्य को अमृत पान कराने के समान उनके श्रेष्ठ उपकार हैं। हम समझते हैं कि आज विश्व की जनसंख्या लगभग 7 अरब के बराबर है। अभी सृष्टि की शेष अवधि 2.34 अरब वर्ष है। इस अवधि में हमारी गणना के अनुसार न्यूनतम 65,52,00,000 अरब लोग जन्म लेंगे व मृत्यु को प्राप्त होंगे। उनके द्वारा अन्वेषित-प्रदत्त कर्मफल सिद्धान्त, सत्य वैदिक धर्म के अनुसार जीवनयापन व जन्म-मरण के दुःख से छूटकर मोक्ष प्राप्ति के उपायों को करके सभी लोग लाभान्वित व कुछ सफल भी हो सकते हैं जिसका श्रेय स्वामी दयानन्द को होगा। यही नहीं उनके द्वारा प्रचारित सिद्धान्तों से संसार को स्वर्ग भी बनाया जा सकता है। इसके लिए सारे संसार के लोगों से वेद मत को स्वीकार कराकर उसके अनुसार सर्वत्र वेदानुसार शासन व्यवस्था को व्यवहारिक रूप देना है। यह कार्य असम्भव नहीं है। यह कार्य तो ईश्वर का कार्य है। महाभारत काल तक जिस प्रकार से सारे संसार में केवल एक वैदिक मत था उसी प्रकार भविष्य में भी हो सकता है। हमें बस अपने कर्तव्य व दायित्व को जानकर उसका निष्ठा से पालन करना है। महर्षि दयानन्द इस कार्य के लिए शैक्षिक व वैचारिक आधार तैयार कर गये हैं। देखना यह है कि यह सृष्टि की शेष अवधि 2.34 अरब वर्षों में कब पूरा होता है। यदि यह कार्य पूरा होगा तो मनुष्यों व जीवात्माओं के लिए जन्म-जन्मान्तरों तक दुःखों से निवृत्ति व मोक्ष का मार्ग खुलेगा। यदि किसी कारण से नहीं होता तो वर्तमान में वह मार्ग बन्द तो है ही, आगे भी बन्द रहेगा। महर्षि दयानन्द को उनके वोध दिवस व शिवरात्रि पर हमारी यह शब्दमय श्रद्धांजलि प्रस्तुत है। हम उनके स्वप्नों के साकार होने की ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। ईश्वर उपासकों की पुरुषार्थ से पूर्ण सच्ची प्रार्थनायें स्वीकार करता है, शायद यह प्रार्थना भी कर ले।

## केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् मध्य प्रदेश

के तत्वावधान में

190 वीं दयानन्द दशमी व 11 कुण्डीय यज्ञ

रविवार, 23 फरवरी 2014, प्रातः 9.00 से 1.00 बजे तक

स्थान: आर्य समाज, संचार नगर, इन्दौर

ब्रह्मा: आचार्य महेन्द्र भाई, दिल्ली

विशिष्ट अतिथि:

श्री रामकुमार सिंह (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष,के.आ.यु.प.)

आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं-

आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार, प्रान्तीय अध्यक्ष-09977967777

शंकरदेव आर्य, प्रान्तीय महामंत्री-09424840057

## श्री जयभगवान गोयल व श्री विजय गोयल का अभिनन्दन



वोहरवार, 6 फरवरी 2014, राष्ट्रवादी शिव सेना प्रमुख श्री जयभगवान गोयल ने भाजपा में सदस्यता ग्रहण कर ली, इस अवसर पर श्री जयभगवान गोयल का शाल व महर्षि दयानन्द का चित्र भेंट कर अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य व प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री विजय गोयल। द्वितीय चित्र में राज्य सभा सदस्य बनने पर श्री विजय गोयल का स्वागत करते डा.अनिल आर्य व श्री जयभगवान गोयल साथ में महेन्द्र भाई जी।

## दयानन्द दशमी पर आर्य समाज विकासपुरी ने निकाली भव्य शोभा यात्रा



रविवार, 9 फरवरी 2014, आर्य समाज विकासपुरी डी ब्लाक, दिल्ली के तत्वावधान में दयानन्द दशमी के उपलक्ष्य में भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। शोभा यात्रा का नेतृत्व श्री ओमप्रकाश घई, डा.अनिल आर्य, श्री बलदेव सचदेवा, श्री धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य, श्री रणसिंह राणा, श्री शिवकुमार मदान, श्री विक्रम नरूला, श्री रवि चड्ढा, श्री राजेन्द्र लाम्बा, श्री अजय तनेजा, श्री हरीश कालरा, श्री आर.के.दुआ, श्री वेद प्रकाश, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, श्री अशोक कथूरिया, श्री उपेन्द्रनाथ तलवार, श्री वीरेन्द्र गोयल, श्रीमती उमा मोंगा आदि कर रहे थे। परिषद् के आर्य युवकों ने श्री सौरभ गुप्ता के निर्देशन में भव्य व्यायाम प्रदर्शन किया। परिषद् के युवकों के साथ डा.अनिल आर्य व दायें चित्र में आर्य समाज सी ब्लाक जनकपुरी की वीरांगनाओं के साथ डा.अनिल आर्य, श्री रणसिंह राणा व दिनेश आर्य।

## आर्य नेता अर्जुन देव चड्ढा का भव्य अभिनन्दन व श्री धर्मपाल आर्य को बधाई



दिनांक 31 जनवरी 2014, माता लीलावती आर्य भिक्षु परोपकरिणी न्यास हरिद्वार के तत्वावधान में कोटा के आर्य नेता श्री अर्जुन देव चड्ढा का भव्य अभिनन्दन करते स्वामी दिव्यानन्द जी, श्री गिरधारीलाल चन्दवानी व श्री देवराज आर्य आदि।द्वितीय चित्र में परिषद् के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य के सुपुत्र अभिनन्दन व सौ.सपना के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई। डा.अनिल आर्य,दुर्गेश आर्य, दिनेश आर्य आशीर्वाद देते हुए।

## रविवार 23 मार्च को जन्तर मन्तर चलो

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में अमर शहीद भगतसिंह,राजगुरु,सुखदेव के बलिदान दिवस पर "राष्ट्र रक्षा यज्ञ व आंतकवाद विरोधी दिवस" रविवार, 23 मार्च 2014 को प्रातः 11 बजे से 1.30 बजे तक जन्तर मन्तर,नई दिल्ली पर आयोजित किया जायेगा। अमर शहीदों को श्रद्धांजलि देने हजारों की संख्या में पहुंचे।- डा.अनिल आर्य,संयोजक

## पं.लेखराम बलिदान दिवस

उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में रविवार, 2 मार्च 2014 को प्रातः 10 से 2 बजे तक दयानन्द बोधोत्सव व पं.लेखराम बलिदान दिवस आर्य समाज, गुडमण्डी, दिल्ली व रविवार 9 मार्च 2014 को प्रातः 9 बजे से 1 बजे तक आर्य समाज, विजय नगर, पुरानी गुप्ता कालोनी,दिल्ली में मनाया जायेगा।-ओम सपरा,प्रधान, फोन: 9818180932

## शोक समाचार

1. माता आशा बत्रा,आर्य समाज, ग्रेटर कैलाश-2, नई दिल्ली की कर्मठ कार्यकर्त्री एवम् परिषद् की अपार सहयोगी का गत दिनों निधन।
2. श्री गोविन्दलाल नागपाल, प्रधान दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल का गत दिनों निधन।
3. श्री हरभगवान अरोड़ा, आर्य समाज, टैगोर गार्डन, नई दिल्ली का गत दिनों निधन।
4. डा.सत्यव्रत ऋषि, आर्य समाज, जनकपुरी सी ब्लाक, दिल्ली का गत दिनों निधन।
5. डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री सभा के पूर्व प्रधान जस्टिस श्री आर.एन. मित्तल का निधन हो गया।

युवा उद्घोष की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि